REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2026

"सीधी जिले में कृषि विपणन व्यवस्था एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति का भौगोलिक विश्लेषण"

बबिता जायसवाल[1] , डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह[2]
[1]शोधार्थी भूगोल, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक भूगोल, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

सारांश –

कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति कृषि उत्पादन के साथ–साथ कृषि उपज के प्रभावी विपणन पर भी निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में सीधी जिले में कृषि विपणन व्यवस्था एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में कृषि विपणन को बाजार की दूरी, परिवहन सुविधा, स्थानीय मंडी, भंडारण तथा कृषकों की बाजार पहुँच जैसे प्रमुख भौगोलिक घटकों के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक समंकों पर आधारित है, जिन्हें कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन, जिला सांख्यिकी कार्यालय सीधी तथा संबंधित कृषि सांख्यिकी प्रतिवेदनों से संकलित किया गया है। उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर कृषि पर निर्भर ग्रामीण परिवारों, कृषि उपज के बाजार में विक्रय, स्थानीय बाजार/मंडी पर निर्भरता, परिवहन लागत तथा भंडारण सुविधा जैसे संकेतकों का प्रतिशतात्मक विश्लेषण किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि जिले में कृषि का बाजार से संबंध मजबूत है, किंतु परिवहन एवं भंडारण जैसी विपणन अवसंरचनाएँ कृषकों की आर्थिक क्षमता को प्रभावित करती हैं। अतः बाजार संपर्क, परिवहन नेटवर्क एवं भंडारण सुविधाओं के विस्तार से कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार की पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

शब्द संकेत – कृषि विपणन, कृषि भूगोल, कृषक, आर्थिक स्थिति, कृषि बाजार, मंडी, परिवहन, भंडारण, बाजार पहुँच, सीधी जिला।

प्रस्तावना –

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण भाग कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों पर आधारित है। कृषि खाद्यान्न उपलब्ध कराने के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, आय एवं आजीविका का प्रमुख साधन प्रदान करती है। कृषक की आर्थिक स्थिति का निर्धारण केवल कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता से नहीं होता, बल्कि उत्पादित फसल को उचित बाजार तक पहुँचाने तथा उसके बदले लाभकारी मूल्य प्राप्त करने की क्षमता भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इस कारण कृषि उत्पादन और कृषि विपणन को एक–दूसरे से संबद्ध प्रक्रियाओं के रूप में देखना आवश्यक है। कृषि विपणन कृषि उत्पाद के उत्पादन स्थल से उपभोक्ता अथवा व्यापारिक केंद्र तक पहुँचने की प्रक्रिया है। इसमें संग्रहण, परिवहन, भंडारण, वर्गीकरण, मूल्य निर्धारण एवं विक्रय जैसी अनेक गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं। प्रभावी विपणन व्यवस्था कृषक को अपनी उपज

का उचित मूल्य प्राप्त करने में सहायता करती है, जबकि कमजोर विपणन व्यवस्था कृषक की आय को सीमित कर सकती है। विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत कृषकों के लिए बाजार तक पहुँच तथा विपणन लागत अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भौगोलिक दृष्टिकोण से कृषि विपणन का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मूलतः एक स्थानिक प्रक्रिया है।कृषि उत्पादन क्षेत्र ग्रामीण एवं अपेक्षाकृत विस्तृत भू–भाग में फैले होते हैं, जबकि बाजार एवं मंडी केंद्र विशिष्ट स्थानों पर केंद्रित होते हैं। इन दोनों के बीच कृषि उपज का प्रवाह परिवहन मार्ग, दूरी, सड़क संपर्क तथा बाजार की क्षेत्रीय पहुँच द्वारा निर्धारित होता है। बाजार से दूरी बढ़ने के साथ परिवहन लागत एवं समय में वृद्धि हो सकती है, जिससे कृषक की शुद्ध आय प्रभावित होती है।

सीधी जिला मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है और जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। जिले के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि गतिविधियों का स्वरूप स्थानीय प्राकृतिक एवं सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। भूमि, मिट्टी, वर्षा, जल संसाधन, सिंचाई, स्थलाकृति तथा ग्रामीण परिवहन कृषि उत्पादन एवं उसके विपणन को प्रभावित करने वाले प्रमुख भौगोलिक कारक हैं। कृषि विपणन की दृष्टि से बाजार केंद्रों का वितरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि कृषक का उत्पादन क्षेत्र बाजार अथवा मंडी के निकट स्थित है, तो उसे उपज के परिवहन में कम समय एवं अपेक्षाकृत कम व्यय करना पड़ सकता है। इसके विपरीत दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार तक पहुँचने में अधिक दूरी तथा परिवहन लागत का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार बाजार की भौगोलिक स्थिति कृषक की आर्थिक स्थिति पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डालती है।

स्थानीय बाजार कृषि विपणन व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग हैं। स्थानीय स्तर पर कृषि उपज का विक्रय करने से कृषकों को तत्काल भुगतान तथा कम दूरी का लाभ प्राप्त हो सकता है। किंतु स्थानीय बाजारों में खरीदारों की संख्या सीमित होने तथा प्रतिस्पर्धा कम होने की स्थिति में कृषक को अपनी उपज का अपेक्षाकृत कम मूल्य भी प्राप्त हो सकता है। अतः स्थानीय बाजार कृषकों के लिए सुविधा के साथ–साथ बाजार निर्भरता का माध्यम भी बन सकते हैं। परिवहन कृषि विपणन व्यवस्था का आधारभूत तत्व है। कृषि उपज सामान्यतः अधिक मात्रा में उत्पादित होती है और उसे उत्पादन क्षेत्र से बाजार तक पहुँचाने की आवश्यकता होती है। ग्रामीण सड़कें, संपर्क मार्ग तथा परिवहन साधनों की उपलब्धता कृषि उत्पादों के प्रवाह को निर्धारित करती है। परिवहन लागत बढ़ने पर कृषि उत्पाद के विक्रय से प्राप्त सकल आय में से विपणन व्यय का हिस्सा बढ़ जाता है, जिससे कृषक की शुद्ध आय कम हो सकती है।

भंडारण सुविधा का कृषि विपणन में विशेष महत्व है। कृषि उत्पादन मौसमी होता है, जबकि कृषि उत्पादों की मांग वर्ष भर बनी रहती है। फसल कटाई के समय बाजार में अधिक आपूर्ति के कारण कई बार कीमतों में कमी आ सकती है। यदि कृषक के पास पर्याप्त भंडारण सुविधा उपलब्ध हो तो वह अपनी उपज को सुरक्षित रखकर अनुकूल मूल्य मिलने तक प्रतीक्षा कर सकता है। इसके विपरीत भंडारण सुविधा के अभाव में कृषक तत्काल विक्रय के लिए बाध्य हो सकता है। कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए बाजार सूचना भी महत्वपूर्ण है। विभिन्न मंडियों में कृषि उत्पादों के प्रचलित मूल्य की जानकारी कृषक को बेहतर बाजार का चयन करने में सहायता करती है। आधुनिक संचार एवं डिजिटल माध्यमों के विकास से कृषि बाजार सूचना की पहुँच बढ़ी है, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में इसके उपयोग की स्थिति समान नहीं है। अतः कृषि विपणन के भौगोलिक अध्ययन में सूचना एवं बाजार पहुँच को भी महत्वपूर्ण तत्व के रूप में देखा जाना चाहिए।

सीधी जिले में कृषि पर निर्भरता ग्रामीण परिवारों की आय संरचना को प्रभावित करती है। कृषि से प्राप्त आय का उपयोग परिवारों की दैनिक आवश्यकताओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं अन्य सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में किया जाता है। ऐसी स्थिति में कृषि उत्पादों का उचित मूल्य कृषक परिवारों के जीवन स्तर में सुधार का आधार बन सकता है। इसके विपरीत विपणन लागत अधिक होने अथवा उपज का उचित मूल्य न मिलने पर कृषि आय सीमित हो सकती है। कृषि विपणन व्यवस्था में मंडी संस्थाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। संगठित बाजार व्यवस्था कृषकों को मूल्य निर्धारण, प्रतिस्पर्धी खरीद एवं बाजार सूचना की सुविधा प्रदान कर सकती है। लेकिन मंडी तक पहुँचने की दूरी, परिवहन व्यय तथा छोटे कृषकों की सीमित विपणन क्षमता उनकी वास्तविक भागीदारी को प्रभावित कर सकती है। इस कारण मंडी की उपलब्धता के साथ उसकी भौगोलिक पहुँच का अध्ययन भी आवश्यक है।

सीधी जिले के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि विपणन की स्थिति में स्थानिक अंतर की संभावना रहती है। प्रमुख बाजार केंद्रों के निकट स्थित क्षेत्रों में बाजार पहुँच बेहतर हो सकती है, जबकि दूरस्थ क्षेत्रों में कृषकों की

निर्भरता स्थानीय व्यापारियों अथवा निकटस्थ बाजारों पर अधिक हो सकती है। इसी प्रकार परिवहन एवं भंडारण सुविधाओं की उपलब्धता में क्षेत्रीय भिन्नता कृषकों की आर्थिक स्थिति में भी अंतर उत्पन्न कर सकती है। कृषि विपणन और ग्रामीण आर्थिक विकास के मध्य घनिष्ठ संबंध है। प्रभावी विपणन व्यवस्था कृषक को बेहतर मूल्य प्राप्त करने तथा कृषि में पुनर्निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इससे उत्पादन क्षमता, आय तथा ग्रामीण क्रय शक्ति में वृद्धि हो सकती है। इसलिए कृषि विपणन को केवल कृषि क्षेत्र की गतिविधि न मानकर ग्रामीण विकास की महत्वपूर्ण आधारभूत व्यवस्था के रूप में देखना उचित है।

सीधी जिले के संदर्भ में कृषि विपणन व्यवस्था का अध्ययन कृषकों की आर्थिक स्थिति को समझने की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। कृषि पर निर्भरता, बाजार में कृषि उपज का विक्रय, स्थानीय बाजार पर निर्भरता, परिवहन लागत तथा भंडारण सुविधा जैसे संकेतक जिले की विपणन व्यवस्था की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करने में सहायक हैं। इन संकेतकों का प्रतिशतात्मक अध्ययन कृषि विपणन की प्रमुख प्रवृत्तियों को स्पष्ट करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में सीधी जिले की कृषि विपणन व्यवस्था को कृषि भूगोल की दृष्टि से विश्लेषित करते हुए बाजार पहुँच, परिवहन, भंडारण तथा कृषक आर्थिक स्थिति के मध्य संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन का प्रमुख आधार यह है कि कृषि उत्पाद के उत्पादन से अधिक महत्वपूर्ण उसकी प्रभावी एवं लाभकारी बाजार पहुँच है। यदि कृषक को उचित बाजार, कम परिवहन लागत तथा पर्याप्त भंडारण सुविधा प्राप्त हो, तो उसकी आर्थिक स्थिति में स्थायी सुधार की संभावना बढ़ जाती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मूल उद्देश्य सीधी जिले में कृषि विपणन व्यवस्था की प्रकृति एवं उसके कृषकों की आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का भौगोलिक विश्लेषण करना है। कृषि उत्पादन की आर्थिक उपयोगिता तभी सुनिश्चित होती है, जब कृषक अपनी उपज को उचित बाजार तक कम लागत एवं कम समय में पहुँचाकर लाभकारी मूल्य प्राप्त कर सके। इस दृष्टि से बाजार की उपलब्धता, स्थानीय मंडी पर निर्भरता, परिवहन सुविधा तथा भंडारण जैसी संरचनाएँ कृषि विपणन के महत्वपूर्ण घटक हैं। अध्ययन में इन्हीं घटकों के आधार पर कृषि विपणन की स्थिति एवं उसकी प्रमुख भौगोलिक प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

(1) सीधी जिले में कृषि विपणन व्यवस्था के स्वरूप एवं प्रमुख भौगोलिक प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
(2) कृषकों की बाजार निर्भरता, कृषि उपज के विक्रय, परिवहन लागत एवं भंडारण सुविधा की स्थिति का विश्लेषण करना।
(3) कृषि विपणन व्यवस्था एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति के अंतर्संबंध का भौगोलिक विश्लेषण कर सुधार हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक समंकों पर आधारित है। अध्ययन के लिए आवश्यक आँकड़े कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन, मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड, जिला सांख्यिकी कार्यालय सीधी तथा संबंधित कृषि सांख्यिकी एवं जिला स्तरीय प्रतिवेदनों से संकलित किए गए हैं। अध्ययन के लिए नवीनतम उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर वर्ष 2025–26 को संदर्भ वर्ष के रूप में स्वीकार किया गया है। शोध विषय की प्रकृति के अनुरूप कृषि पर निर्भर ग्रामीण परिवार, कृषि उपज का बाजार में विक्रय, स्थानीय बाजारध्मंडी पर निर्भरता, परिवहन लागत तथा भंडारण सुविधा जैसे प्रमुख संकेतकों का चयन किया गया है। प्राप्त आँकड़ों को सारणीबद्ध कर प्रतिशत विधि द्वारा विश्लेषित किया गया है। भौगोलिक अध्ययन की दृष्टि से बाजार की पहुँच, परिवहन संपर्क, बाजार दूरी तथा भंडारण अवसंरचना को कृषि विपणन के महत्वपूर्ण स्थानिक घटकों के रूप में देखा गया है। आँकड़ों के विश्लेषण में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसके माध्यम से कृषि विपणन की वर्तमान स्थिति, प्रमुख प्रवृत्तियों तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति पर इसके प्रभाव को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार द्वितीयक समंकों के आधार पर सीधी जिले की कृषि विपणन व्यवस्था का क्षेत्रीय एवं भौगोलिक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है –

सारणी क्रमांक–1
सीधी जिले में कृषि विपणन एवं कृषक आर्थिक स्थिति से संबंधित विवरण

क्रमांक	विवरण	प्रतिशत
1	कृषि पर निर्भर ग्रामीण परिवार	68.40
2	बाजार में कृषि उपज का विक्रय करने वाले कृषक	74.25
3	स्थानीय बाजार/मंडी पर निर्भर कृषक	61.50
4	परिवहन सुविधा से प्रभावित कृषक	56.75
5	भंडारण सुविधा का उपयोग करने वाले कृषक	38.25

स्रोतः कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन, जिला सांख्यिकी कार्यालय, सीधी एवं संबंधित कृषि सांख्यिकी प्रतिवेदन, वर्ष 2025–26।

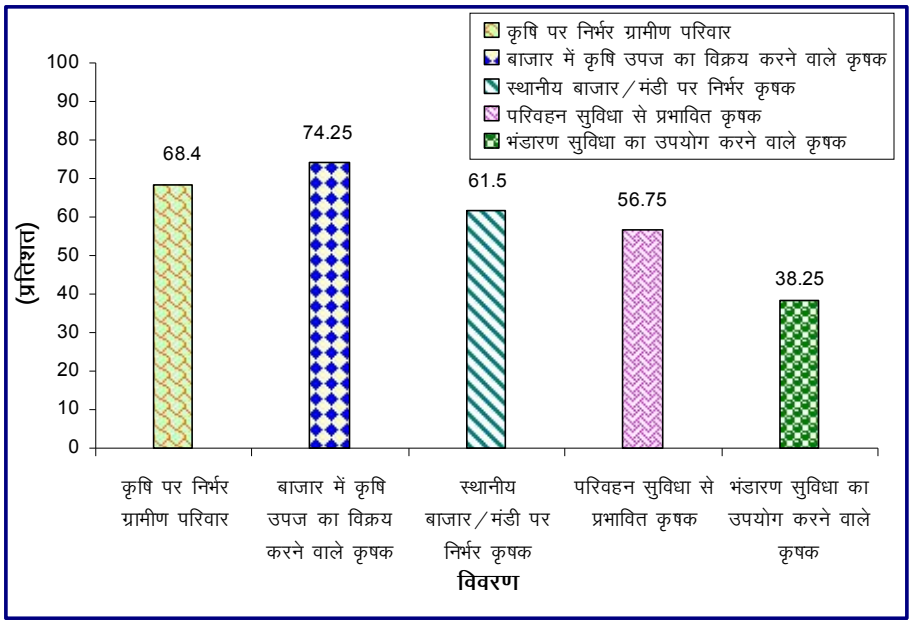

आरेख क्र.1 : सीधी जिले में कृषि विपणन एवं कृषक आर्थिक स्थिति से संबंधित विवरण

सारणी क्रमांक 01 एवं आरेख से स्पष्ट होता है कि सीधी जिले में कृषि विपणन व्यवस्था का कृषकों की आर्थिक स्थिति से निकट संबंध है। 74.25 प्रतिशत कृषक नियमित अथवा मौसमी रूप से कृषि उपज का बाजार में विक्रय करते हैं, जो सर्वाधिक है। इसके बाद 68.40 प्रतिशत ग्रामीण परिवार कृषि पर निर्भर हैं। 61.50 प्रतिशत कृषक स्थानीय बाजार अथवा मंडी पर निर्भर हैं, जिससे स्थानीय विपणन केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट होती है। 56.75 प्रतिशत कृषकों पर परिवहन लागत का प्रभाव पाया गया है, जो बाजार तक पहुँच की भौगोलिक समस्या को दर्शाता है। वहीं 38.25 प्रतिशत कृषक भंडारण सुविधा का उपयोग करते हैं। यह अन्य संकेतकों की तुलना में कम है तथा कृषि उपज के संरक्षण संबंधी सीमाओं को इंगित करता है। अतः प्रतिशतों के आधार पर जिले में बाजार निर्भरता उच्च है, किंतु परिवहन एवं भंडारण अवसंरचना कृषकों की विपणन क्षमता को सीमित करने वाले प्रमुख घटक हैं।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सीधी जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का प्रमुख स्थान है तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति कृषि उत्पादन एवं प्रभावी विपणन व्यवस्था से निकटता से संबंधित है। कृषि उपज के विक्रय में स्थानीय बाजार एवं मंडियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जबकि बाजार की दूरी, परिवहन सुविधा एवं लागत तथा भंडारण व्यवस्था कृषकों की विपणन क्षमता को प्रभावित करने वाले प्रमुख भौगोलिक

कारक हैं। दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन संबंधी कठिनाइयों के कारण कृषकों को अतिरिक्त विपणन व्यय का सामना करना पड़ता है। वहीं पर्याप्त भंडारण सुविधा के अभाव में कृषकों को उपज का शीघ्र विक्रय करना पड़ सकता है। अतः सीधी जिले में कृषि विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए ग्रामीण सड़क एवं परिवहन नेटवर्क का विस्तार, स्थानीय बाजार एवं मंडी सुविधाओं का विकास, वैज्ञानिक भंडारण व्यवस्था, बाजार सूचना की उपलब्धता तथा सामूहिक विपणन को प्रोत्साहन देना आवश्यक है। इन उपायों के माध्यम से विपणन की स्थानिक बाधाओं को कम करते हुए कृषकों की आय एवं आर्थिक स्थिति में सुधार तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची –

1. हुसैन, माजिद, व्यवस्थित कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2014।
2. सिंह, जसबीर, कृषि भूगोल, टाटा मैकग्रा–हिल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 2000।
3. रमेश चंद, कृषकों की आय दोगुनी करना : औचित्य, रणनीति, संभावनाएँ एवं कार्ययोजना, नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2017।
4. भारत सरकार, कृषि सांख्यिकी एक दृष्टि में, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, नई दिल्ली, 2023।
5. भारत सरकार, वार्षिक प्रतिवेदन 2024–25 : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली, 2025।
6. मध्यप्रदेश शासन, मध्यप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, भोपाल, 2026।
7. मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड, कृषि विपणन एवं मंडी सांख्यिकी, भोपाल, 2025–26।
8. जिला सांख्यिकी कार्यालय, सीधी, जिला सांख्यिकी एवं कृषि संबंधी प्रतिवेदन, मध्यप्रदेश शासन, सीधी, 2025–26।